हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-VIII (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)-HL-**HL8**

निर्धारित समयः तीन घंटे ***Time allowed: Three Hours***	*अधिकतम अंकः 250* ***Maximum Marks: 250***

नाम (Name): Dilkhush

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 08, 04/09/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]: 1 1 3 0 3 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Dilkhush

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **FIVE** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained):

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद के सशक्त हस्ताक्षर 'महाप्राण' सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित लम्बी कविता 'राम की शक्ति पूजा' से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में निराला के राम की परवश स्थिति दिखाई गई है जहाँ शक्ति ने रावण का पक्ष ले लिया है।

रघुनायक श्रीराम सीता की मुक्ति के लिए युद्ध क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, उनकी कमर तूणीर बाँध दिया गया है, और उनके सिर पर मुकुट। उनका व्यक्तित्व उनके हृदय से लेकर बाजुओं तक फैला हुआ है। और उस दुर्गम पर्वत पर आ रहे हैं जहाँ अंधकार ही अंधकार है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्य-सौंदर्य -

(i) भाव-सौन्दर्य

(क) प्रस्तुत पंक्तियों में श्रीराम का सौन्दर्य वर्णन किया गया है।

(ख) सीता की मुक्ति के लिए आतुर श्रीराम की तैयारियों का वर्णन।

(ग) कविता की अन्य पंक्तियों में
" जानकी तात! उद्धार प्रिया का हो न सका
वह एक और मन रहा, राम का जो न थका।"
कहकर राम ने आशावादी चरित्र का अभिव्यक्ति।

शिल्प - सौन्दर्य

(घ) भाषा तत्समी-प्रधान है, लेकिन अभिव्यक्ता बोधगम्य है।

(ङ) निराला के 'मुक्त-छंद' की कविता किन्तु आंतरिक लयात्मकता विद्यमान

(च) विस्मयादिबोधक व अन्य विराम चिन्हों का सुन्दर प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) अबे, सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पाई खुशबू, रंगोआब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतराता है केपीटलिस्ट!
कितनों को तूने बनाया है गुलाम,
माली कर रक्खा, सहाया जाड़ा-धाम।

व्याख्येय पद्यांश महाप्राण व्यक्तित्व 'निराला' द्वारा रचित कविता 'कुकुरमुत्ता' से ~~लिया गया~~ है लिया गया है। इन पंक्तियों में उन्होंने 'गुलाब' व 'कुकुरमुत्ता' की सुन्दरता का 'वर्गीय चरित्र' प्रतीकार्थ में बताया है।

कुकुरमुत्ता (निम्न वर्ग का प्रतीक), गुलाब (पूँजीवादी, या उच्च वर्ग, अभिजात सौन्दर्य) से कहता है कि जो तूने यह सुन्दरता पाई है उसके पीछे बहुत से कारण हैं, किसान और जानवरों की मेहनत से तैयार खाद का प्रयोग। तूने अपनी यह सुंदरता पाने के लिए बहुत से लोगों की मेहनत को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अन्तर्निहित किया है, तेरी देखरेख के लिए जो माली नियुक्त उसने कठिन सर्दी में भी कोहिर त्याग किया है, फिर तेरी डाल पर अभिजात्य वर्ग का ही अधिकार है।

विशेष / काव्य-सौंदर्य -

भाव-सौंदर्य

(क) वर्गीय पद्धति में भेदभाव की व्याख्या, कुकुरमुत्ता का सहारा लेकर की है।

(ख) अभिजात वर्ग व निम्न वर्ग के सौन्दर्य बोध का परिचायक।

(ग) अहलता-बोध।

शिल्प सौन्दर्य

(घ) भाषा का मिश्रण
अबे (आधुनिक उद्बोधन भाषा)
कैपिटलिस्ट (अंग्रेजी भाषा)
व तत्सम शब्द।

(ङ) छन्द-मुक्त लेकिन आंतरिक लय विद्यमान।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) ओ चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व-वन की व्याली,
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण, प्रथम कंप-सी मतवाली!
हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खल लेखा!
हरी-भरी-सी दौड़-धूप, ओ जल-माया की चल-रेखा!

प्रस्तुत पद्यांश छायावाद के सुकुमार कवि '<u>जयशंकर प्रसाद</u>' द्वारा रचित भावप्रधान महाकाव्य 'कामायनी' के '<u>चिंता सर्ग</u>' से लिया गया है। इन पंक्तियों में मनु, मानव सभ्यता के विनाश के बाद व्यथित भाव से अपने मन्तव्य को प्रकट कर रहा है।

मनु अपने अकेलेपन व व्यथित स्थिति को प्रदर्शित कर रहे हैं, कि उनके ललाट पर ~~बनी~~ बनती-बिगड़ती रेखाओं, जो कि एक अभावग्रस्त स्थिति का संकेत है, छायी हुई है।

एक ज्वालामुखी की तरह विस्फोट के बाद से अपना सर्वस्व खो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देने वाले की तरह अकेले पश्चाताप कर रहे हैं। मनु श्रद्धा के आगमन को जल में उत्पन्न तरंगों से संकेत कर रहे हैं।

काव्य सौंदर्य :-

भाव- सौंदर्य .

(क) प्रस्तुत पंक्तियों में मनु की चिन्तित स्थिति को दर्शाया है

(ख) सृष्टि के निर्माण की आरंभावस्था को व्यक्त किया गया है।

(ग) मनु के अकेलेपन व विषमता की स्थिति की ओर संकेत.

(घ) शिल्पगत तत्वों की उपस्थिति, भाषा प्रसाद-छन्द युक्त लयात्मक, उपमा अलंकार की छटा दर्शनीय, आदि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) सहसा वीणा झनझना उठी–

संगीतकार की आँखों में ठण्डी पिघली ज्वाला-सी झलक गयी–

रोमांच एक बिजली-सा सब के तन में दौड़ गया।

अवतरित हुआ संगीत

स्वयम्भू

जिस में सोता है अखण्ड

ब्रह्मा का मौन

अशेष प्रभामय।

डूब गये सब एक साथ।

सब अलग-अलग एकाकी पार तिरे।

व्याख्येय पंक्तियां प्रयोगवाद व नयी कविता काव्यांदोलनों के प्रस्तावक 'अज्ञेय' द्वारा रचित लम्बी कविता 'असाध्यवीणा' से उद्धृत है। इनमें कवि ने अपनी काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों व वीणा के 'मौन से स्वर' की यात्रा को बताया है।

जब प्रियंवद ने वीणा के स्वरखोज में अपने 'स्व' का विलय कर, आत्मनिवेदन किया, तब वीणा से स्वर गुंजित होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

पूरे वातावरण में एक बिजली ~~की~~ तरह चमक दौड़ जाती है। यह संगीत, छिंद्र का नहीं बल्कि 'महामौन' में उपस्थित स्वर से उपजा हुआ है।

~~[illegible]~~

इस स्वर का सृजनात्मक प्रभाव यह रहा कि राजा ने अलग चुना, रानी ने अलग अर्थात् सबको अपने-अपने 'स्वधर्म' की पहचान हुई।

भाव-सौंदर्य -

① 'अज्ञेय' ~~ने~~ 'ज़ेन बौद्धमत' प्रभाव को महामौन से व्यक्त किया है।

② सृजन की अहंता, प्रक्रिया व उसके प्रभाव का अतुलनीय वर्णन।

③ 'वीणा का स्वर' को महामौन की उपज बताया है।

शिल्प-सौंदर्य -

④ तत्सम प्रधान भाषा, लेकिन आंतरिक लय विद्यमान।

⑤ छंद का ढाँचा, भावों के अनुसार।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है

दी गई पंक्तियाँ प्रगतिवादी कविता के सशक्त हस्ताक्षर व 'जनकवि' 'नागार्जुन' द्वारा रचित 'बादल को घिरते देखा है' से ली गई हैं। इनमें कवि अपने हिमालय दर्शन का आनुभविक वर्णन की व्यंजना करते रहे हैं।

नागार्जुन बताते हैं कि उन्होंने हिमालय की चोटियों पर 'कामायनी' में वर्णित 'शिव का निवास', न 'भारत-भारती' में वर्णित 'पार्वती-शिव' और न ही कालिदास के मेघदूत में वर्णित यक्ष का देखा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन्होंने तो हिमालय की चोटियों पर बादलों को आपस में टकराते हुए व गरजते हुए देखा है।

भावसौंदर्य

(1) कवि ने आत्मकथात्मक-शैली में हिमालय का वर्णन किया है।
(2) हिमालय से जुड़ी आध्यात्मिक-मिथकों का पुरजोर खंडन किया है।
(3) अपने काल में प्रकृति की सुन्दरता को प्राथमिकता देने का नैरन्तर्य विद्यमान।

शिल्प-सौन्दर्य

(4) विराट व भयानक बिम्बों की सघन उपस्थिति (गरजन-गरजन भिड़ते..)
(5) भाषा तत्समप्रधान लेकिन लय विद्यमान।
(6) कविता के हिसाब से नये प्रतिमानों को गढ़ने पर जोर।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये:

10 × 5 = 50

(क) बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै, जिवै त बौरा होई।

प्रस्तुत दोहा भक्तिकाल की संतकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि 'कबीर' की साखियों के संग्रह 'कबीर ग्रंथावली' के 'बिरह कौ अंग' से लिया गया है जिसका संकलन श्यामसुंदर दास ने किया है। इसमें कबीर ने विरह-दग्ध स्थिति को बताया है।

कबीर कहते हैं कि कोई कितना ही समझा ले, सांत्वना दे लेकिन जब विरह, शरीर में बस जाता है तो कुछ सुनाई नहीं देता अर्थात इन्द्रियाँ कार्यहीन हो जाती हैं। और राम के वियोग में विरह-दग्ध प्राणी या तो जी नहीं पाता है और अगर जी भी गया तो पागल हो जाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

(क) प्रस्तुत पंक्तियों में कबीर ने विरह की मार्मिक अभिव्यंजना की है।

(ख) राम के ~~निर्गुण~~ रूप का विरह दिखाना ~~अतुलनीय~~ अतुलनीय है।

(ग) विरहव्यथित प्राणी की मार्मिक स्थिति का वर्णन

(घ) 'सधुक्कड़ी भाषा' का प्रयोग व आम-आदमी को बोधगम्य।

(ङ) कबीर ने भावनात्मक रहस्यवाद को दिखाते हुए कहा भी है -

"तलफै बिनु बालम मोर जिया
दिन चैन नहीं, रात नहीं निंदिया, तलफ-तलफ के भोर किया।"

में वही भाव की अभिव्यक्ति की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) भई पुछार, लीन्ह बनवासू। बैरिनि सवति दीन्ह चिलवाँसू।
होइ खर बान बिरह तनु लागा। जौ पिउ आवै उड़हि तौ कागा।।
हारिल भई पंथ मैं सेवा। अब तहँ पठवौं कौन परेवा?।।
धौरी पंडुक कहु पिउ नाऊँ। जौं चित रोख न दूसर ठाऊँ।।
जाहि बया होइ पिउ कँठ लवा। करै मेराब साइ गौरवा।।
कोइल भई पुकारति रही। महरि पुकारै 'लेइ लेइ दही'।।
पेड़ तिलोरी औ जल हंसा। हिरदय पैठि बिरह कटनूंसा।।
जेहि पंखी के निअर होइ, कहै बिरहै के बात।
सोई पंखी जाइ जरि, तरिवर होइ निपात।।

प्रस्तुत पद्यांश भक्तिकालीन निर्गुण प्रेमाश्रयी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि 'जायसी' द्वारा रचित 'पद्मावत' महाकाव्य से लिया गया है। इन पंक्तियों में 'नागमती वियोग खण्ड' में नागमती की विरह-दग्ध स्थिति को दर्शाया है।

षड्ऋतु वर्णन में पुरवाइयाँ, चलना शुरू हो गई है लेकिन नागमती अभी भी बनवास का जीवन काट रही है। कौए से अपने पति को आने की इच्छा कर उड़ने को कहती है। अपने प्रिय के बिना कहाँ शरण लूँ।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दोहे में, पक्षियों के पंख होने से वे अपने विरह की वेदना को मिटा सकते हैं लेकिन जिनके ~~[illegible]~~ पंख ही जल गये हैं उनकी तो हालत और गंभीर है।

भाव-सौन्दर्य -

(क) बारहमासा वर्णन की काव्यरूढ़ि के माध्यम से विरह-वेदना का वर्णन।

(ख) नागमती के इस विरह को आ० शुक्ल ने 'अशिव-माधुर्यों का निर्लज्ज प्रलाप नहीं, बल्कि हिन्दू गृहिणी की विरहवाणी' बताया है।

(ग) छंद : चौपाई व दोहा

(घ) भाषा ठेठ अवधी, लोक-व्यवहार का सलंग्न।

(ङ) सूरदास की गोपियाँ भी इसी विरह में रहती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) अँखियाँ हरि-दरसन की भूखी।
कैसे रहैं रूपरसराची ये बतियाँ सुनि रूखी।।
अवधि गनत इकटक मग जोवत तब एती नहिं झूखी।
अब इन जोग सँदेसन ऊधो अति अकुलानी दूखी।।
बारक वह मुख फेरि दिखाओ दुहि पय पिवत पतूखी।
सूर सिकत हठि नाव चलायो ये सरिता हैं सूखी।।

प्रस्तुत पंक्तियाँ आ. रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित 'भ्रमरगीतसार' से ली गई हैं जिनकी रचना कृष्णकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि 'सूरदास' ने की है। इसमें गोपियों के चित्त को बताया है।

जब 'उद्धव' मथुरा से कृष्ण का संदेश पहुँचाने गोकुल जाते हैं तो प्रेममार्गी गोपियाँ, कृष्ण के दर्शन की लालसा का विरहमयी वर्णन कर रही हैं। वे कहती हैं कि हमारी आँखें हरि के दर्शन की भूखी हैं, अब तो रो-रो के इनमें आँसू भी सूख गये हैं। दिन गिन-गिनके

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बहुत दुखी हो गयी हूँ। हे उद्धव, इस वियोग की प्रताड़ना का संदेश कृष्ण तक पहुँचाना। और सूरदास कहते हैं कि सूखी नदी में हठ करके भी नाव नहीं चलायी जा सकती।

विशेष -

(क) सूर के विरह - वर्णन की मार्मिक अभिव्यंजना।

(ख) निर्गुण - सगुण द्वन्द्व में उद्धव सगुण की विजय को स्वीकारते हैं।

(ग) गोपियों के मनोभाव की सूक्ष्म अभिव्यक्ति, यह सूरदास की कला की श्रेष्ठता का उदाहरण।

(घ) भाषा - ब्रज व लयात्मकता

(ङ) उपमा अलंकार की छटा दर्शनीय है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) दिन दिन दूनो देखि दारिद दुकाल दुख,
दुरित दुराज, सुख सुकृत सकोचु है।
माँगे पैंत पावत पचारि पातकी प्रचंड,
काल की करालता भले को होत पोचु है।
आपने तौ एक अवलंब अंब डिंभ ज्यों,
समर्थ सीतानाथ सब संकट-बिमोचु है।
'तुलसी' की साहसी सराहिये कृपालु, राम!
नाम के भरोसे परिनामु को निसोचु है।।

दी गई पंक्तियाँ रामकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि 'तुलसीदास' द्वारा रचित 'कवितावली' के 'उत्तरकांड' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में तुलसीदास भक्तिहीन अकाल की स्थिति का वर्णन कर रहे हैं।

दिनोंदिन अकाल की स्थिति बदतर होती जा रही, प्रचण्ड व भयावह स्थिति काल की विनाशक स्थिति को बढ़ा रही है। लेकिन हम तो निडर हैं क्योंकि सीतानाथ अर्थात् भगवान श्रीराम संकटों को हरने वाले हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और तुलसी आत्मनिवेदन व दास्यभाव को प्रकट करते हुए, श्रीराम के चरणों में नतमस्तक हो जाते हैं।

~~काव्य सौंदर्य~~
काव्य सौंदर्य -

① ~~पंक्तियों~~ में दास्यभाव व आत्मनिवेदन की भावना व्यंजित हुई है।

② ~~यहाँ~~ श्रीराम को संकट हरने वाले बताया गया है।

③ प्रथम पंक्ति में अनुप्रास की छटा दर्शनीय है ('द' की आवृत्ति)

④ 'कवित्त छन्द' का प्रयोग।

⑤ निर्गुण नहीं, सगुण राम, जिनके चरणों में समर्पण किया जा सकता है, का पक्ष।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) चमक, तमक, हाँसी, ससक, मसक, झपट, लपटानि।

ए जिहिं रति, सो रति मुकति, और मुकति अति हानि।।

प्रस्तुत दोहा रीतिसिद्ध काव्य के महान कवि 'बिहारी' के एकमात्र ग्रंथ 'बिहारी सतसई' से लिया गया है जिसका संकलन आधुनिक काल के कवि 'पं. जगन्नाथ दास रत्नाकर' ने किया है। इस दोहे में नारी के दैहिक वर्णन की अभिव्यक्ति किया गया है।

'बिहारी' कहते हैं कि नायिका के शरीर की चमक, और दमक, दाँतों की मुस्कराहट, आदि अतुलनीय है। इन मनोभावों में जो रम गया अर्थात रत हो गया, वही मुक्ति का पात्र है, लेकिन यह मुक्ति हानिकारक है क्योंकि ऐसा दर्शन बाद में नहीं मिल सकता।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शिल्प -

① रीतिकालीन मानसिकता दैहिक सौंदर्य में विश्वास रखती है, जो दर्शाया है।

② धैर्यहीन रसिकों व दरबारियों की आकांक्षापूर्ति।

③ क्रियाओं के एक ही पंक्ति में प्रयोग के बावजूद भी अन्विता बनी हुई है, 'शब्दों की तराश'।

④ प्रथम पंक्ति में अंतिम व्यंजनों की पुनरावृत्ति से अनुप्रास अलंकार की छटा पैदा की है।

⑤ ब्रजभाषा का सुन्दर प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) उत्थान के पीछे पतन सम्भव सदा है सर्वथा,
प्रौढ़त्व के पीछे स्वयं वृद्धत्व होता है यथा।
हाँ! किन्तु अवनति भी हमारी है समुन्नति-सी बड़ी,
जैसी बढ़ी थी पूर्णिमा वैसी अमावस्या पड़ी!

प्रस्तुत पद्यांश द्विवेदीयुगीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर 'मैथिलीशरण गुप्त' द्वारा रचित नवजागरणीय भावनाओं से ओतप्रोत कविता 'भारत-भारती' से लिया गया है। इन पंक्तियों में कवि ने काल की चक्रीय अवधारणा' को बताया है।

गुप्तजी कहते हैं कि उत्थान-पतन परस्पर चलने वाली स्थिति है, जिसका उत्थान होता है, उसका पतन भी निश्चित है जैसे कि यौवन के बाद बुढ़ापा। किंतु जो हमारी अवनति है, वो समुन्नति से बड़ी है क्योंकि हम आगे पूर्णिमा की तरह

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बढ़े रहेंगे और अचानक अमावस्या
अपार अंधेरे ने घेर लिया।

विशेष -

① काल की चक्रीय अवधारणा का प्रतिपादन।

② विरोधाभास अलंकार का प्रयोग।

③ ~~खड़ी~~ खड़ी बोली का काव्यरूप में प्रयोग का श्रेष्ठ उदाहरण।

④ उपमा अलंकार की ~~अ~~ उपस्थिति

⑤ आशावादी व नवजागरण की चेतना ~~का~~ विकास, अपने कर्म में लीन रहने का संदेश।

⑥ राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन को दशा - दिशा प्रदान की ~~[illegible]~~।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा
मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघवन बीच गुलाबी रंग।

दी गई पंक्तियाँ 'जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित भावप्रधान महाकाव्य 'कामायनी' के 'श्रद्धा सर्ग' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में मनु के व्यथित व चिंतित जीवन में, मान व शोभा में आयी 'श्रद्धा' के आगमन को व उसकी वेशभूषा का बताया है।

'श्रद्धा' ने नीले रंग का वस्त्र ओढ़ रखा था लेकिन उसी में से उसका कोमल अंग आधा खुला दिखाई दे रहा था। वह ऐसा लग रहा था कि मानो

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिजली की चमक जैसा फूल हो
और बादलों के वन के बीच
गुलाबी रंग का फूल हो।

काव्य सौन्दर्य -

1) 'कामायनी' में 'श्रद्धा' को आदर्श चरित्र के रूप में व्यक्त किया है।

2) यहीं से मनु की ज्ञान, इच्छा, क्रिया की भिन्नता की स्थिति पैदा होती है जिसका अंत समरसता मूलक स्थिति पर होता है।

3) छायावादी सौन्दर्य का वर्णन लेकिन कहीं-कहीं रीतिकालीन दैहिक सौन्दर्य भी।

4) कोमल व सुकुमार बिंब व उपमा अलंकार की उपस्थिति।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) यह निवृत्ति है ग्लानि, पलायन
का यह कुत्सित क्रम है,
नि:श्रेयस यह श्रमित, पराजित,
विजित बुद्धि का भ्रम है।
इसे दीखती मुक्ति रोर से,
श्रवण मूँद लेने में,
और दहन से परित्राण-पथ
पीठ फेर देने में।

प्रस्तुत पद्यांश से महाप्राण व्यक्तित्व वाले छायावादी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला द्वारा रचित 'राम की शक्तिपूजा' से लिया गया है। इसमें शक्ति के अन्याय पक्ष में जाने पर राम की विचलित मन का वर्णन किया गया है।

इन पंक्तियों में बताया गया है कि कर्मों से पलायन करना, फिर ग्लानि करना ही पराजय है कि नकि युद्ध भूमि में लड़ते हुए मरना। अपने आँखें मूंद लेने और पीठ फेरना अपेक्षित नहीं है, हे राम, शक्ति की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मौलिक कल्पना करके, तुम भी शक्ति को अपने पक्ष में कर सकते हो जिससे तुम्हारी विजय सुनिश्चित हो।

विशेष :-

(1) पराजय का असली मतलब कर्मों / दायित्वों से भागना बताया है।

(2) आशावादी होने पर बल दिया गया है।

(3) "यही नाव ' वह एक और मन रहा राम का जो न थका ' में आता है जो ' जानकी हाय ! प्रिया का उद्धार हो न सका ' के ग्लानि को प्राप्त करने के हेतु आतुर है।

(4) भाषा तत्समनिष्ठ लेकिन आंतरिक लयात्मकता विद्यमान।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) ...ये गरजती, गूँजती, आंदोलिता
गहराइयों से उठ रहीं ध्वनियाँ, अतः
उद्भ्रांत शब्दों के नए आवर्त में
हर शब्द निज प्रति-शब्द को भी काटता,
वह रूप अपने बिंब से ही जूझ
विकृताकार-कृति
है बन रहा
ध्वनि लड़ रही अपनी प्रतिध्वनि से यहाँ।

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी कविता के सशक्त हस्ताक्षर गजानन माधव 'मुक्तिबोध' के काव्यसंग्रह 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' की 'ब्रह्मराक्षस' कविता से ली गई हैं। इसमें मुक्तिबोध ने मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष को बखूबी उभारा है।

ब्रह्मराक्षस बावड़ी में प्रवेश करता है तो वह उस आंतरिक मन में रहता द्वंद्व है कि एक विचार, दूसरे विचार को काट देता है। और उसका बदला हुआ रूप

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बनकर, हर विचारधारा का ~~अच्छा~~ ~~विचार के~~ विरोधी नजर आता है अर्थात् आत्मचेतस व विश्वचेतस का अन्तर्द्वन्द्व चलता रहता है।

विशेष -

① मुक्तिबोध ने मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के ऐतिहासिक उत्तरदायित्व को न निभाने के कारणों/ द्वन्द्वों पर विचार किया है।

② ~~ब्रह्म~~राक्षस के आंतरिक मन के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त किया है,

③ बिम्ब प्रयोगशीलता व ~~फैंटेसी~~ शिल्प का प्रयोग

④ तत्सम प्रधान नवीन भाषा में आंतरिक लय विद्यमान।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य के 'जनकवि' 'नागार्जुन' द्वारा रचित लघुकविता 'अकाल और उसके बाद' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में कवि ने अकाल के दौरान की स्थिति को वर्णन किया है।

अकाल के दौरान, अन्न न होने से घरों में चक्की का उपयोग नहीं हो रहा, चूल्हा से भी धुआँ नहीं उठ रहा। कानी कुतिया ~~[illegible]~~ भोजन न मिलने के कारण मालिक के पास लेटी हुई है। भोजन जुटाने के प्रयासों में छिपकलियाँ ~~[illegible]~~ भी थक चुकी है व चूहों

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की हालत शिकस्ता हो गई है।
अर्थात् सभी चराचर जीव अकाल की दुर्दशा से पीड़ित हैं।

काव्य सौन्दर्य -

(1) अकाल की स्थिति का मार्मिक चित्रण।

(2) केवल मनुष्य ही प्रकृति के सभी जीवों का वर्णन - उपलक्षित बिंब

(3) 'कई दिनों तक' के माध्यम से काल का अद्भुत प्रभाव

(4) बिम्बधर्मी, प्रचलित जीना अनुभव।

(5) विकलांगता होने के नुकसानों का स्रोत / असमर्थता को बताया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 5

(क) लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है! गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गाँव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर-भर सुनहले पानी में सारे गाँव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें।! ताड़ के पेड़ों की पंक्तियाँ झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग, कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्ढे! डॉक्टर को सभी चीजें नई लगती हैं। कोयल की कूक ने डॉक्टर के दिल में कभी हूक पैदा नहीं की। किंतु खेतों में गेहूँ काटते हुए मजदूरों की 'चैती' में आधी रात को कूकनेवाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

प्रस्तुत गद्यावतरण आंचलिक उपन्यास धारा के प्रतिनिधि 'मैला आँचल' से उद्धृत है जिसके लेखक 'फणीश्वरनाथ रेणु' हैं। इसमें स्वतंत्रताप्राप्ति के पश्चात मेरीगंज के प्रतीक के माध्यम से भारतीय गाँवों की सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति को उभारा है।

डॉ. प्रशान्त अपने आर्थिक लालच से हटकर गाँव में सेवा करने के लिए मेरीगंज में आता है, शहरीवर्ग का होने के कारण, मेरीगंज

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का वातावरण उसे नया लगता है। खेतों में गेहूँ की फसलें पककर तैयार हैं, नाला नदी, ताड़ के वृक्ष आदि को देखकर डॉ. प्रशान्त खुश लग रहा है। पहले प्रकृति के अनुभवों ने उस पर प्रभाव नहीं किया लेकिन अब वह उस वातावरण में रम गया है।

रचनात्मक सौंदर्य -

1. प्रकृति के आँचल पूर्ण सौन्दर्य का मार्मिक वर्णन।
2. शहरी लोगों के दिल में प्रकृति की सुन्दरता का सन्देश दिया है।
3. मेरीगंज के माध्यम से भारतीय गाँवों के नैसर्गिक सौंदर्य का वर्णन।
4. भाषा सहज व सरल, वर्णनात्मक शैली का प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) महाराज, शास्त्रों में तो आत्मा-परमात्मा के ही मन्तर लिखे हुए रहते हैं न? आपके चरणों का सेवक ठहरा, दो-चार मन्तर मेरे अपवित्तर कानों में भी पड़ जायें, तो मेरी आत्मा का मैल भी छँट जाये। क्या करूँ, गुसाईं! घास खाने वाले पशु बैल नहीं हुए, अनाज खाने वाला पशु किसनाराम ही हो गया..... महाराज, मरने के बाद आत्मा कहीं परलोक को चली जाती है या इसी लोक में भटकती रह जाती है?

प्रस्तुत गद्यांश राजेन्द्र यादव द्वारा 'एक दुनिया समानांतर' में संकलित 'ज्ञानरंजन/त्यागशुक्ल' द्वारा लिखित कहानी 'प्रेतमुक्ति' से लिया गया है। इन पंक्तियों में किसनराम, अपने मित्र पं. केवलानंद पाण्डे से मरने के बाद आत्मा की मुक्ति करने का आग्रह कर रहा है।

दलित किसनराम, पण्डित से आत्मा-परमात्मा के अवर्णनीय ज्ञान को समझने का प्रयास कर रहा है व दो-चार

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मंत्रों को पढ़कर आत्मा की मुक्ति चाहता है।

विशेष -

(1) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने ब्राह्मणवादी व्यवस्था पर चोट की है।

(2) आम-आदमी को वेदों का सार दो-चार मंत्रों के माध्यम से समझाने वाले पंडितों पर व्यंग्य।

(3) लघुमानववाद की अवधारणा का [illegible]।

(4) भाषा देशज, व आम बोलचाल की

(5) विरामचिन्हों का सटीक प्रयोग व संवाद शैली अतुलनीय।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अन्न पर स्वत्व है भूखों का और धन पर स्वत्व है देशवासियों का। प्रकृति ने उन्हें हमारे लिये–हम भूखों के लिये–रख छोड़ा है। वह थाती है, उसे लौटाने में इतनी कुटिलता! विलास के लिये उनके पास पुष्कल धन है और दरिद्रों के लिये नहीं?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यावतरण हिन्दी नाटकों के सम्राट 'जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित 'स्कंदगुप्त' से ~~लिया~~ लिया गया है। यह कथन सेनापति 'पर्णदत्त' का है जो सामाजिक व्यवस्था की विद्रूपताओं पर प्रकाश डालते हैं।

पर्णदत्त कहते है कि राज्य में जो ~~भी~~ अन्न है उस पर निम्न वर्ग / आम आदमी का अधिकार है और उससे पैदा होने वाले धन पर पूंजीपतियों का। जो लोग अन्न को लौटाने में इतनी ~~कु~~ कुटिलता

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिखा रहे हैं उनका कोई धर्म नहीं है। भोग-विलास के लिए आम-आदमी को दूर किया लेकिन भूखों-गरीबों के लिए कुछ देने को नहीं।

विशेष -

(1) समाज में वितरणमूलक अन्याय की व्यवस्था पर व्यंग्य किया है।

(2) यही भाव यशपाल के 'दिव्या' व दिनकर की 'कुरुक्षेत्र' में व्यक्त होता है।

~~(3)~~ 'जब तक मनुज का सुख भाग नहीं सम होगा।'

(3) विरामचिह्नों का सटीक व उपदेशात्मक शैली का प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिये व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के राजनीतिक उपन्यास के प्रतिनिधि रचना 'महाभोज' से लिया गया है जिसकी लेखिका 'मन्नू भंडारी' हैं। इन पंक्तियों में "दा साहब" उनके लिए चुनाव लड़ रहे नौसिखिया 'लखन' से कहते हैं।

राजनीति में अवसरवादिता को बताया गया है कि एक क्षण उलटफेर कर सकता है। 'बिसू की मौत' का अवसर सत्ताधारी व विपक्ष की पार्टियों के लिए एक अवसर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

था क्योंकि हम भावनात्मक वातावरण में ~~वे~~ लोगों को सांत्वनाओं के माध्यम से लुभाना चाहते थे।

शिल्प →

① राजनीति ~~की~~ विद्रूपताओं का सफल चित्रण।

② नौकरशाह व ~~राजनीति~~ राजनीतिज्ञों के अवसरवाद की कुटिल नीति।

③ डाक्टर ~~के~~ के जाघपन का ~~चित्रण~~। मुखौटे पर नैतिकता का ~~पर्दा~~पाश।

④ संवाद शैली व भाषा ~~बहुत~~ सहज सरल व सुन्दर।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो; वायुमंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो; आकाश को चूमकर, अवकाश की लहरों में झूमकर, उल्लास खींच लो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यावतरण ललित-निबंध कला को चरम स्तर पर पहुँचाने वाले आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'कुटज' निबंध से लिया गया है जिसमें वे 'कुटज' के माध्यम से मानवता को जीने की प्रेरणा देना चाहते हैं।

कुटज विषम स्थितियों, पहाड़ों की चट्टान पर उगकर बड़ा हुआ है, कठिन मेहनत व परिश्रम से आवश्यक पदार्थों का संग्रह किया है ताकि प्रगति कर सके। न केवल परिश्रम बल्कि उल्लास को

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी जीवन में जाना चाहते हैं।

अतः 'कुरुज' के परिश्रमी जीवन के माध्यम से मानवता को संरक्षत व अपनी प्रगति के लिए अपनाये जा सकने वाले रास्तों का वर्णन।

विशेष -

(1) अभिव्यंजनात्मक, चारित्र-व्यंजक, वर्णनात्मक निबंध शैली की झलक।

(2) उद्बोधक व प्रेरणीय शैली का प्रयोग।

(3) विराम चिन्हों का उचित व सटीक प्रयोग कर अर्थवत्ता को बढ़ाया है।

(4) भाषा तत्समी प्रधान होने के बावजूद बोधगम्य।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 5

(क) जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भावयोग कहते हैं और कर्मयोग एवं ज्ञानयोग के समकक्ष मानते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठित निबंधकार आ० रामचन्द्र शुक्ल के निबंध संकलन 'चिन्तामणि' के 'कविता क्या है' निबंध से उद्धृत है। इन पंक्तियों में कविता के महत्व को बताया गया है।

कविता अपने 'स्व' का विलयन करने की वह क्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति प्रकृत दशा को प्राप्त कर सकता है। और कविता का उद्देश्य रस प्राप्त करना है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हृदय को स्पंदित करने वाली वाणी को कविता व जितना महत्व 'सांख्ययोग' व कर्मयोग, उतना ही 'भावयोग' का है जिसकी प्राप्ति कविता के माध्यम से ही हो सकती है।

विशेष -

(1) वैयक्तिक शैली व शब्दों के चयन का अतुलनीय प्रयोग।

(2) कविता के महत्व को कर्मयोग व ज्ञानयोग के समक्ष।

(3) रस सिद्धान्त का प्रतिपादन

(4) सूत्रशैली का प्रयोग।

(5) भाषा तत्सम किन्तु पठनीय।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

प्रस्तुत गद्यावतरण हिन्दी नाटक विधा के सम्राट लेखक 'जयशंकर प्रसाद' द्वारा लिखित राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत नाटक 'स्कंदगुप्त' से लिया गया है जिसमें नाटक के अंत में 'देवसेना', 'स्कंदगुप्त' को अपने राज्य के प्रति दायित्वबोध का ध्यान कराती है। ~~~~

~~देवसेना~~ कहती है कि अपने मनोभावों से ऊपर उठकर जीना एक तपस्या है, अपने साम्राज्य को बचाने व समृद्ध

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करने के लिए भी बाधक नहीं बन सकती जिससे आप निश्चिंत हो सको।

आनन्द तो सुखों से परे है, एक सुख की प्राप्ति तो दूसरे सुख की इच्छा को जन्म देती है। और यह कारण वह व्याकुलता, क्षोभ, ~~आडम्बरपूर्ण~~ को अपने अंदर समाहित कर, स्वच्छंदता की मना कर देती है।

विशेष -

① प्रसाद ने अपने 'समरसता दृष्टि' का प्रतिपादन किया है।

② इच्छा, ज्ञान, क्रिया की समरसता को आनन्द कहते हैं और कामायनी में भी बताया है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा रचित नाटक 'भारत-दुर्दशा' से लिया गया है। इन पंक्तियों में भारत-दुर्दशा का खलनायक 'भारत-दुर्दैव' अपने 'सत्यानाश' फौजदार को बुलाता है। ~~और~~

आलस, व अज्ञान के रूप में प्रकट होते हुए अपने वैयक्तिक विशेषता को बताते हैं और कहते हैं कि किस तरह उन्होंने न केवल ~~आध्यात्मिक~~ आधिभौतिक ~~[illegible]~~ बल्कि आध्यात्मिक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जगत पर अपना प्रभाव छोड़ रखा है जो भारत को दुर्दशा की स्थिति में लाने वाले कारक है।

विशेष ->

(1) नाटकीय तनाव व अभिव्यक्ति, भावनाओं को चरित्रों का भाषा पहचाना दर्शनीय है।

(2) भारत के अधिकार क्षेत्र को बताया है।

(3) नवजागरणीय चेतना की महत्व बताया है ताकि ऐसे बुरे कारकों से पीछे हटकर राष्ट्रीय चेतना जागृत हो सके।

(4) भारतेन्दु की आतुरता 'हाँ हाँ ! भारत दुर्दशा न देखी जाए' से स्पष्ट होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) जब हम अपने-आपको उन तमाम लोगों से बेहतर और ऊँचा समझते थे जो पिटी-पिटाई लकीरों पर चलते हुए अपनी सारी ज़िन्दगी एक बदनुमा और रिवायती घरौंदे की तामीर में बरबाद कर देते है, जिनके दिमाग हमेशा उस घरौंदे की चहारदीवारी में कैद रहते हैं जिनके दिल सिर्फ़ अपने बच्चों की किलकारियों पर ही झूमते हैं, जिनकी बेवकूफ बीवियाँ दिन-रात उन्हें तिगनी का नाच नचाती हैं और जिन्हें अपनी सफ़ेदपोशी के अलावा और किसी बात का कोई गम नहीं होता।

प्रस्तुत गद्यांश 'राजेन्द्र यादव' द्वारा संकलित नई कहानियों के संग्रह 'एक दुनिया समानांतर' में एक कहानी से उद्धृत है। इसमें सम्बन्धों के बदलते स्वरूप को मार्मिक व नाटकीय तरीके से बताया गया है।

'भोगा हुआ यथार्थ' में नायक, अपने आप को, घर की चारदीवारी में जीवन बर्बाद कर देने वालों से ऊँचा समझता है जो न कोई सामाजिक, न ही

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कुछ अलग करने की हिम्मत रखते हैं। वे केवल अपनी ड्यूटी करके पैसा कमाना व अपनी पत्नियों के इशारे पर नाचते रहते हैं।

शिल्प -

(1) आधुनिक समय में संबंधों की यांत्रिकता का मार्मिक वर्णन

(2) फिरकनी का नाच, जैसे मुहावरों का प्रयोग कर रोचकता पैदा की है।

(3) उपमा अलंकार का प्रयोग.

(4) भाषा में उर्दू के 'सफ़ेदपोशी' का प्रयोग ~~[illegible]~~ कर वैविध्य।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी; और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे; वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी।

प्रस्तुत गद्यांश ~~[illegible]~~ हिन्दी कहानी की दशा-दिशा बदलने वाले सम्राट लेखक 'प्रेमचंद' द्वारा लिखित 'कफ़न' से उद्धृत है जिसमें 'घीसू' और 'माधव' के माध्यम से समाज के 'परम यथार्थवाद' को बताया है।

घीसू और माधव' संवाद में एक वे उनके दलित होने व सामंतवादी व्यवस्था का प्रचलन होने के कारण, अपनी आर्थिक दरिद्रता के लिए दोषी ठहराते हैं। इतना ही नहीं, ~~[illegible]~~ किसानों की मेहनत

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का फल उन्हें नहीं बल्कि सामंतवादी, ~~(क)~~ जमींदारों को मिलता है जो सूद आदि के माध्यम से उन्हें लूटते हैं।

विशेष।

1. लेखकीय हस्तक्षेप के माध्यम से ~~(सम)~~ सामाजिक स्थितियों का यथार्थवादी वर्णन।
2. ~~पूँजीपतियों~~ व सामन्तों की लूटकारी प्रवृत्ति का चित्रण।
3. 1936 में ~~(संघ)~~ प्रेमचंद ~~(आदि)~~ प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्ष, अतः आदर्शवाद से परम यथार्थवाद की यात्रा।
4. ऐसी ही स्थिति 'गोदान', 'सद्गति' व 'सभ्यता का रहस्य' आदि में मिलती है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation